❋ उपसंहार ❋

❋ उपसंहार ❋

साठोत्तरी एवं समकालीन लेखिकाओं में मृदुलाजी का विशिष्ट सर्जको में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने आज तक जो साहित्य लिखा उसमें अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। मृदुलाजी ने साहित्य की विविध विधाओं को अपनाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

मृदुलाजी का जन्म सुखी संपन्न परिवार में होते हुए भी बचपन और युवा अवस्था में उन्हें विविध समस्याओं के साथ संघर्ष करना पड़ा। जीवन के विविध अनुभवों की सँकरी से गुजरते हुए उन्होंने अपनी संवेदना को उस अनुभव के साथ जोडकर यथार्थ साहित्य का सृजन किया उसमें वे काफी सफल रही है। आठवे दशक के आरंभ से लेखन कर्म में वे जुट गई। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन से प्राप्त हुए निष्कर्षाप्रत पहलुओं से स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व कलाप्रिय, सौंदर्यप्रिय, संवेदनशील गुणों से संपन्न है। नौकरी के सिलसिले में वे देश विदेश की यात्रा कर चुकी जिससे विभिन्न जनजीवन से परिचित हो गई। उनकी इसी घुमक्कड़ी वृत्ति ने उनमें सामाजिक चेतना जागृत की एवं यथास्थित से विद्रोह करने की प्रवृत्ति जगायी। इसलिए उनके उपन्यासों और कहानियों में उनकी भ्रमणशीलता का परिचय मिलता है।

उनकी बहुमुखी प्रतिभा ने कहानी व उपन्यास के अलावा नाटक, निबंध, संस्मरण आदि विधाओं को समृद्ध किया है। वे एक सफल अनुवादक भी है। वातावरण की सत्यता, अनुभव का अपनापन और लेखकीय तटस्थता मृदुला गर्गजी की अपनी विशेषता है। उनके साहित्य में आम आदमी की पीड़ा, छटपटाहट, कुंठा, असमर्थता, सेक्स, प्रेम, नारी-पुरूष की पराधीनता, अंधश्रद्धा एवं रूढी परंपराओं से ग्रस्त समाज, गरीबी,निर्धनता, सामाजिक विषमता आदि को गहराई के साथ चित्रित किया है। मृदुला जी एक सफल उपन्यासकार एवं कहानीकार है। उनका साहित्य प्रायः नारी जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर करता है तथा नारी जीवन के विविध अछूते और अभिन्न अंगों पर प्रकाश डालता है। साठोत्तरी हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनानेवाली मृदुला जी अब तक के अपने जीवन में विविध सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है। वे

एक संवेदनशील, यथार्थवादी एवं सात्विक वृत्ति की साहित्यकार है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत अध्ययनार्थ चार कहानीसंग्रह 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', 'ग्लेशियर से', 'डेफोडिल जल रहे है', 'शहर के नाम' में संकलित कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। विवेचित चार कहानीसंग्रहों में विविध जीवन संदर्भो से जुडी कहानियाँ लिखकर लेखिकाने अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। 'मध्यवर्ग' की कुंठा, असमर्थता, और कृत्रिमता इनका चित्रण गहराई के साथ आलोच्य कहानियों में चित्रण हुआ है।

उनकी की कहानियों में कथ्यगत विविधता पायी जाती है। उन्होंने आधुनिक जीवन से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक दांपत्य तथा दांपत्येत्तर संबंध, नारी का दमन और शोषण, नारी की प्रणयानुभूति, प्रसव वेदना से पीड़ित नारी, यौन प्रवृत्ति, मृत्यु बोध आदि से संबंधित कथ्य पर आधारित अत्यधिक उत्कृष्ट कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियाँ नायिका प्रधान है। आत्मनिर्भर तथा आत्मसजग नारी पात्रों के सामने पुरूष पात्र बौने सिद्ध होते हैं। वे स्त्रियाँ अति साधारण घेरलू होते हुए भी आत्मनिर्भर बनकर अपनी पहचान बनाती हुई देती है।

उनकी कहानियों में पारिवारिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन का भी चित्रण व्यापक परिप्रेक्ष्य में हुआ है। 'मौत में मदद', 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', उसका विद्रोह इन कहानियों में मजदूरी की समस्या दिखाई देती है। पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में दांपत्य संबंध समस्या 'चकर घिन्नी', 'अवकाश' कहानियों में दिखायी देती है। 'दो-एक फूल' कहानी में व्यसनाधीनता की समस्या को उठाया है। पति-पत्नी रिश्तों का खोखलापन 'चकरघिन्नी', 'तुक', 'अवकाश' आदि कहानियों में दिखायी देता है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में निम्नवर्ग की आर्थिक विषमता, मजदुरो का शोषण, उनकी लाचारी, विवशता का अंकन 'मौत में मदद','टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', 'अनाड़ी' कहानियों में हुआ है। मालिक नौकर संबंधों, शोषक-शोषित संबंध इन की प्रस्तुति उनकी 'मौत में मदद', 'अनाड़ी' 'उसका विद्रोह', 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' कहानियों में हुई है।

उनकी कहानियों की कथ्य की विशेषता यह है कि कहानियों में

देहरी पर खड़ी झिझकती औरत देहरी लांघ बाहर आ जाती है। भले ही मृदुला गर्गजी की नायिकाओं को पतित, भ्रष्टा, कुंठित, दिग्भ्रांत, निरंकुश या कुछ भी कहकर गाली दी गई हो लेकिन मृदुलाजी ने तटस्थ रहकर विविध स्थितियों को परखने की कोशिश की है। स्थिति की नजाकत से न कतराते हुए उन्होंने वर्जनीय प्रसंगों और संबंधों की कहानियाँ लिखकर अपनी साहसिकता का परिचय दिया है। मृदुलाजी में अनुभव को भाषा से और भाषा को अनुभव से उकेरने की क्षमता है। उनकी कहानियाँ अपनी सरल सीधी भाषा और विषयों की विविधता के कारण आकर्षित करती है। मृदुलाजी ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैयक्तिक क्षेत्रों से संबंधित कथ्य का चयन कहानी जगत के लिए किया है। उनकी इस विशेषता के कारण वे समकालीन कथाकारों से अलग पहचान बनी है।

मृदुला गर्ग जी ने पात्रों की सम्यक योजना में पर्याप्त सफलता पाई है। चरित्र-चित्रण में पात्रों की स्वभावगत विशेषताएँ सूक्ष्मता एवं बखूबी से चित्रित हुई है। ये सभी पात्र जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों की प्रतीक है। मृदुलाजी ने उनके बाहरी-भीतरी दोनों पक्षों का अंकन सफलता से किया है। पात्रों की मानसिकता, उनके दृष्टिकोण, आपसी संबंध आदि का प्रभावकारी चित्रण हुआ है। कहानियों में चित्रित पात्र अपने समय और समाज के जीवित हिस्से है उनके बहाने पाठक नए जीवन मूल्यों को जीने की चुनौती स्वीकारता है। पात्रों के माध्यम से ही आज के टूटते परिवेश में जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी की नयी जीवनदृष्टि की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने कहानियों में मुख्य पात्रों के साथ-साथ गौण पात्रों का चित्रण भी मार्मिकता से किया है। एवं उन्हीं के माध्यम से समाज का यथार्थवादी चित्रण भी सामने रखा गया है।

समस्त कहानी के पात्रों का चित्रण बड़ी मार्मिकता से हुआ है। 'टुकड़ा- टुकड़ा आदमी' कहानी संग्रह के सभी पात्र सशक्त है। उनमें अन्याय के विरूद्ध लड़ने की शक्ति है। 'टुकड़ा- टुकड़ा आदमी' कहानी में बलिया और रामदीन इन दो पात्रों के द्वारा गरीब मजदूरों की यातनामय जिंदगी चित्रित की है। 'अवकाश' कहानी में पत्नी के माध्यम से वैवाहिक जीवन में बनते-बिगड़ते संबंधों को विशद किया है। शांतम्मा द्वारा नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण 'दो-एक

फूल' कहानी में हुआ है। 'झुलती कुरसी' कहानी में व्यक्ति के मानस की आकुलता एवं तद्जन्य स्थितियों का सूक्ष्म एवं चित्रात्मक दस्तावेज है। 'मेरा' कहानी के पात्रोंद्वारा आज के मध्यवर्गीय परिवार के नौकरीपेशा स्त्री-पुरूष के बीच बच्चो के जन्म की समस्या को लेकर उत्पन्न तनाव का जीवंत चित्र चित्रित हुआ है। 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह की कहानियों के पात्रों के माध्यम से विशेष रूप से नारी मन की तरलता, संवेदनशीलता, भावुकता, शीतलता जैसी कोमल भावनाओं के अंकन के साथ,साथ पात्रों की संघर्षशीलता, जुझारूपन, अन्याय के साथ लड़ने की तीव्र इच्छा शक्ति का अंकन हुआ है। प्रस्तुत पात्रों के द्वारा यही स्पष्ट होता है कि, मृदुला गर्गजी की कहानियों का परिवेश बहुत जीवंत है।

मृदुला गर्गजी का भाषा पर असाधारण अधिकार है। भाषा के विभिन्न प्रयोगों से उनकी भाषा में निखार आया है। कहानियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों की मानसिकता, टूटन और बिखराव के अनुसार अलग-अलग प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं स्थानों पर अंग्रेजी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग पात्रानुरूप किया है। जैसे -''ब्लड-टेस्ट पॉजिटिव, सिलिफिस प्रेंजेट।'' समय और परिस्थिति के अनुरूप विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं से प्रकट करनेवाली शब्दावली का प्रयोग किया है। छोटे-छोटे सरल वाक्यों के साथ भाषा में नाटकीयता, संवेदनशीलता, होने के कारण उनकी कहानी की भाषा सार्थ बन गयी है। स्थान-स्थान पर उन्होंने उर्दू-फारसी, देशज, अंग्रेजी, तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे - आदतन, फौरन,रूखसत, लजीज, अहदन, सिलल बिलल्लो, हाड-गोड, पॉजिटिव, निगेटिव, हेडक्लार्क, कम्पौंडरबाबू, चीयरमैनसाब, इसट्राइक आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा में अपने कथ्य को सार्थक एवं प्रभावशाली रूप में संप्रेषित करने का सामर्थ्य है।

मृदुला गर्गजी ने आलोच्य कहानियों में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, फ्लैशबैक, वार्तालाप, पत्रशैली आदि शैलियों का प्रयोग करके कहानियों में यथार्थ वातावरण की निर्मिती की है। मृदुलाजी ने अपने कथ्य की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के लिए पात्रों की परिस्थितिनुरूप शैली का प्रयोग किया है। ज्यादातर मृदुलाजी ने वर्णनात्मक शैली

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। जैसे - 'झुलती कुरसी', 'अलग-अलग कमरे', 'करार' आदि कहानियों में किया है। मृदुला गर्ग की कहानियाँ भाषाशैली की दृष्टि से देखा जाए तो सफल बन चुकी है। भाषा के विभिन्न प्रयोगों से उनकी कहानियों में निखार आया है और शैली के विभिन्न रूपों को उन्होंने अपनी कहानियों के लिए चुना है। भाषा शैली की दृष्टि से मृदुलाजी की कहानियाँ सफल बन चुकी है।

मृदुला गर्गजी ने अपनी कहानियों में समाज से संबंधित समस्याओं को बड़ी सूक्ष्मता से और बारीकी से अंकित किया है। अपनी कहानियों में समसामायिक समाजजीवन की पहचान उसमें जीवनयापन कर रहे आदमी की तकलीफ, उनका संघर्ष पूरी ईमानदारी के साथ अपने रचनाओं में उतारने का प्रयास किया है। समाज और व्यक्ति की समस्याओं, मानसिक जटिलताओं का चित्रण गहराई के साथ अपनी आलोच्य कहानियों में किया है। उनकी कहानियों में विवाह संबंधित, पति-पत्नी के रिश्तों का खोखलापन, कन्या जन्म की समस्या, प्रणयानुभूति, यौन समस्या, व्यसनाधीनता, अंधविश्वास, श्रमिक लोगों की समस्या, भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी, आर्थिक विषमता आदि समस्याएँ दिखायी देती है। उनकी कहानियों में अधिकतर नारी की ही समस्या उठायी है। उन्होंने नारी का केवल दयनीयता का चित्रण नहीं किया बल्कि उसके बदलते रूपों को संघर्षमयी, विद्रोही बोल्ड एवं बदलते नारी प्रतिमा को भी उद्‌घाटित किया है।

मृदुलाजी ने अपनी कहानियों में विवाह से संबंधित समस्या 'खरीदार' कहानी के माध्यम से सामने लाने का प्रयास किया है। आज भी कन्या जन्म को एक समस्या माना जाता है, इसका यथार्थ चित्रण 'तीन किलो की छोरी' कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है। यौन समस्या से पीड़ित नारी का भी चित्रण लेखिकाने 'चकरघिन्नी', 'झुलती कुरसी' आदि कहानियों के माध्यम से किया है। अर्थाभाव के कारण सामान्य आदमी को अनेक कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आम आदमी के जीवन में आर्थिक विषमता ने विविध समस्याओं का पहाड़ खड़ा कर दिया है। इसका चित्रण 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', 'मौत में मदद', 'अनाड़ी', 'उसका विद्रोह' आदि कहानियों में हुआ है । मृदुलाजी ने

समसामायिक विषमताग्रस्त समाज में जीवन की पहचान तथा समाज जीवन यापन कर रहे आदमी की तकलीफ, उसका संघर्ष पूरी प्रामाणिकता के साथ अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास किया है। समाज और व्यक्ति की समस्याओं का, मानसिक जटिलताओं का चित्रण गहराई के साथ अपनी आलोच्य कहानियों में किया है। हर एक कहानी में किसी न किसी समस्या को उजागर करते हुए समाज जागृति का काम एवं पाठक को अंतर्मुख होकर सोचने को बद्‌ध किया है।

अतः स्पष्ट होता है कि लेखिका का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। उनका यह व्यक्तित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरक एवं आदर्श प्रतीत होता है तथा कृतित्व पाठकों को जीवन जीने की नयी दृष्टि देता है। लेखिका ने पारिवारिक जीवन का ही लेखन किया है ऐसी बात नहीं है, उन्होंने सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी लेखन किया है। उनकी कहानियों में उच्चवर्ग से लेकर मध्यवर्ग तक हर वर्ग के लोगों की समस्या उठायी गयी है।

तात्पर्य मृदुला गर्गजी की 'कहानी विधा' कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्‌ध और उल्लेखनीय है। उनका लेखन यथार्थता से जुड़ा हुआ एवं नई पीढ़ी के लिए प्रेरक तथा नारी जगत के लिए मार्गदर्शक, व्यक्ति एवं समाज को अंर्तमुख करनेवाला है। भविष्य में भी कहानीकार मृदुला गर्गजी से आशाएँ और संभावनाएँ की जा सकती है।